असमान राष्ट्रीय विकास की समस्या तथा उत्तर प्रदेश एवं बिहार राज्य की स्थिति

डॉ० गोविन्द कुमार सुमन[1]

राष्ट्रों के आर्थिक विकास के इतिहास से यह भली भांति स्थापित एवं मान्य हो चुका है कि किसी भी देश में आर्थिक विकास की प्रक्रिया को इस प्रकार से घटित होना चाहिए जिससे इसका लाभ देश के प्रत्येक क्षेत्र एवं प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँच सके। ऐसा नहीं होने पर क्षेत्रीय विषमता/असंतुलन की समस्या उत्पन्न होती है। समय अन्तराल में यह विषमता उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है तथा देश के सामाजिक–आर्थिक तथा राजनीतिक ताने बाने के लिये खतरा बन जाती है। निःसंदेह किसी भी देश में अनेकों भौगोलिक एवं ऐतिहासिक कारणों से क्षेत्रीय विषमता पहले से ही विद्यमान होती है। ऐसी स्थिति में राज्य व्यवस्था का यह प्रमुख कर्तव्य बन जाता है कि आर्थिक विकास की नीतियों एवं कार्यक्रमों का इस प्रकार नियमन एवं संचालन करें कि एक उचित समयावधि में क्षेत्रीय विकास में विषमता के अन्तराल को पाट दिया जाये। अर्थात् पिछड़े क्षेत्रों में विकास की आधारभूत संरचनाओं को तेजी से विकसित कर वहाँ अपेक्षाकृत ऊँची वृद्धि दर से निवेश कार्यक्रमों एवं आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाये। यह कार्य तब और भी आवश्यक हो जाता है जब कोई देश आर्थिक नियोजन के माध्यम से विकास करना चाहता है और समतावादी प्रतिमान पर अपने सामाजिक एवं आर्थिक ढ़ांचे को विकसित करना चाहता है। भारत का घोषित सामाजिक–आर्थिक लक्ष्य यहीं रहा है। इसके विकास की रणनीति भी आर्थिक नियोजन पर आधारित रही है।

भारतीय विकास रणनीति में संतुलित क्षेत्रीय विकास का लक्ष्य सदैव ही एक आवश्यक घटक के रूप में विद्यमान रहा है। द्वितीय पंचवर्षीय योजना में ही यह स्पष्ट उल्लेख किया गया था कि विकास की किसी भी विस्तृत योजना में यह पूर्वापेक्षित है कि कम विकसित क्षेत्रों की विशिष्ट आवश्यकताओं को उचित एवं यथेष्ट ध्यान प्राप्त हो। निवेश का प्रतिमान इस प्रकार से बनाया एवं लागू किया जाये जो अर्थव्यवस्था को संतुलित क्षेत्रीय विकास की ओर अग्रसर करें।

द्वितीय एवं तृतीय पंचवर्षीय योजनाओं में स्पष्ट उल्लेख किया गया कि तकनीकी एवं आर्थिक सीमाओं को ध्यान में रखते हुये जहां तक हो सके आधारभूत उद्योगों को कम विकसित क्षेत्रों में स्थापित किया जाये। इसे राष्ट्र में क्षेत्रीय संतुलन स्थापित करने की एक प्रमुख नीति के रूप में इंगित किया गया। साठ के दशक के अंतिम वर्षों में राष्ट्रीय विकास परिषद ने दो कार्यकारी समूह (वर्किंग ग्रुप्स) बनाए। प्रथम नियुक्ति 'पाण्ड़े वर्किंग ग्रुप' की हुई, जिसका कार्य औद्योगिक रूप से पिछड़े राज्यों एवं केन्द्रशासित क्षेत्रों की पहचान करना था। द्वितीय नियुक्ति 'वांचू वर्किंग ग्रुप' की हुई, जिसका कार्य पिछड़े क्षेत्रों में औद्योगीकरण प्रारम्भ करने हेतु राजकोषीय एवं वित्तीय प्रोत्साहनों (इंसेंटिव्स) की संस्तुति करना था। कुछ साधारण परिमार्जन के साथ दोनों समूहों की संस्तुतियों को क्रियान्वयन हेतु स्वीकार किया गया। कुछ साधारण परिमार्जन

[1] सहायक प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, गाँधी महाविद्यालय, उरई (जालौन)

के साथ दोनों समूहों की संस्तुतियों को क्रियान्वयन हेतु स्वीकार किया गया। तदोपरान्त पंचवर्षीय योजनाओं की रणनीतियों में क्षेत्रीय विषमता की समस्या को हल करने के लिये विभिन्न उपायों तथा उठाये जाने वाले कदमों की रूपरेखा को विस्तृत स्थान प्रदान किया गया। उत्तरोत्तर योजनाओं में इस उद्देश्य से निर्मित होने वाली रणनीतियां अधिकाधिक सुस्पष्ट एवं प्रभावकारी प्रतीत होने लगी। समयान्तराल में क्षेत्रीय असंतुलन की समस्या को हल करने वाली उदभूत हुई नीतियों को तीन श्रेणियों में रखा जा सकता है।

(अ) केन्द्र से राज्यों को होने वाले वित्तीय संसाधनों के हस्तान्तरण में पिछड़ेपन को एक कारक के रूप में विचार में लेने की स्वीकृति हुई।
(ब) पिछड़े क्षेत्रों के विकास के लिये विशेष विकास कार्यक्रम चलाया जाने लगा,
(स) पिछड़े क्षेत्रों में निजी निवेश को बढ़ावा देने के उपाय किये गये।

लम्बे समय से हो रहे योजनान्तर्गत प्रयासों एवं अनेकों नीतिगत प्रयासों के बावजूद यह प्रतीत होता है कि क्षेत्रीय असंतुलन की समस्या के समाधान में वांछित सफलता नहीं मिली है। ये प्रयास क्षेत्रों के बीच उत्तरोत्तर बढ़ते हुये आर्थिक विकास के अन्तराल को रोकने में भी सक्षम नहीं हुये है। क्योंकि क्षेत्रीय असंतुलन से उत्पन्न होने वाली समस्याएं, जैसे कि न्यूनतम जीवन यापन के लिये होने वाली प्रवास की समस्या आज भी विषम आकार ग्रहण किये हुये हैं। इससे एक अथवा दूसरे रूप में दुष्परिणाम प्रकट हो रहे हैं। इस समस्या की ओर सामाजिक एवं आर्थिक चिन्तकों ने भारतीय नीति नियामकों को काफी समय पूर्व ही आगाह कर दिया था। हाल के वर्षों में महाराष्ट्र, विशेषकर मुम्बई, में बिहार एवं उत्तर प्रदेश से आये लोगों के प्रति घटित हुई हिंसक गतिविधियां इसकी एक विशिष्ट उदाहरण बनी है। कर्नाटक के मैसूर शहर से भी प्रवासियों के विरोध में स्वर उभरे हैं। बिहार एवं उत्तर प्रदेश जैसे पिछड़े हुये राज्यों में जहां गरीबी एवं बेरोजगारी का साम्राज्य आज भी कायम है। अपराधीकरण बढ़ता जा रहा है। जाति एवं धर्म का राजनीतिकरण उत्तरोत्तर गहरा होता जा रहा है। पिछड़े राज्यों का जो भी मानदण्ड अपनाया जाये। बिहार एवं उत्तर प्रदेश उसके अन्तर्गत आ जाते हैं। इसीलिए आज भी इन्हें 'बिमारू' राज्यों के रूप में श्रेणीकृत किया जाता है।

नब्बे के दशक के प्रारम्भिक वर्षों में अपनाई गयी आर्थिक नीतियों में भारतीय अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक परिवर्तन प्रारम्भ किये हैं। यह घोषणा की गयी थी कि यह आर्थिक नीतियां भारतीय अर्थव्यवस्था को एक ऊंचे विकास पथ पर ले जायेगी। इसके अनुरूप परिणाम भी प्राप्त हो रहे हैं जैसे कि भारतीय अर्थव्यवस्था में इस अवधि में सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर अभूतपूर्व रही है। यह भी घोषणा की गयी थी कि नई आर्थिक नीतियों के अन्तर्गत ऐसे उपाय किये जा रहे हैं जिससे क्षेत्रीय विषमता कम होगी। नई आर्थिक नीतियों के अन्तर्गत अर्थव्यवस्था का संचालन हो रहे डेढ़ दशक से अधिक समय हो रहा है। आज यह देखना समीचीन है कि उत्तर प्रदेश एवं बिहार जैसे राज्यों में आर्थिक विकास की प्रक्रिया का कार्य निष्पादन राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था तथा महाराष्ट्र जैसे अग्रणी राज्यों की तुलना में कैसा रहा है? प्रस्तुत प्रपत्र में राज्यों के प्रतिव्यक्ति निवल घरेलू उत्पाद के निरपेक्ष मान तथा इसकी वृद्धि की प्रवृत्ति दर (चरघातांकी) से विभिन्न राज्यों की आर्थिक स्थिति तथा क्षेत्रीय असमानता को दर्शाने का प्रयास किया गया है। इससे राज्यों के आर्थिक विकास की प्रक्रिया के कार्य निष्पादन की स्थिति भी स्पष्ट हो जाती है।

तालिका–1
प्रति व्यक्ति निवल राज्य घरेलू उत्पाद (निघउ) : निरपेक्ष एवं सापेक्ष स्थिति

(1993–94 की कीमतों पर)

क्षेत्र	प्रति व्यक्ति निघउ (रू. में)			उत्तर प्रदेश का अन्य क्षेत्रों से अनुपात			बिहार का अन्य क्षेत्रों से अनुपात		
	80–81	92–93	04–05	80–81	92–93	04–05	80–81	92–93	04–05
भारत	5340	7564	12516	74.5%	66.5%	49.0%	62.9%	49.3%	34.5%
उत्तर प्रदेश	3982	5032	6138	--	--	--	--	--	--
बिहार*	3363	3730	4324	--	--	--	--	--	--
महाराष्ट्र	7102	11191	17864	56.1%	44.9%	34.4%	47.4%	33.3%	24.2%

तालिका एक में उत्तर प्रदेश एवं बिहार राज्य के प्रतिव्यक्ति निबल घरेलू उत्पाद (प्र.नि.घ.उ.) की निरपेक्ष एवं सापेक्ष स्थिति को दर्शाया गया है। सभी राज्यों में दर्शाये गये समयावधि में प्रतिव्यक्ति उत्पादन (प्र.नि.घ.उ.) में वृद्धि हुई हैं किन्तु दृष्टव्य है कि प्रदेश एवं बिहार राज्य में हुई बढ़ोत्तरी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था एवं महाराष्ट्र राज्य की तुलना में काफी कम रही है। बिहार की स्थिति उत्तर प्रदेश से भी काफी नीचे है। फलस्वरूप सापेक्ष दृष्टि से उत्तर प्रदेश एवं बिहार राज्य राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था एवं महाराष्ट्र राज्य की तुलना में उत्तरोत्तर पिछड़ते जा रहे हैं। तालिका एक से यह भी स्पष्ट है कि उत्तर प्रदेश राज्य की प्रतिव्यक्ति निबल घरेलू उत्पाद 1980–81 में राष्ट्रीय निबल घरेलू उत्पाद की जहां 74.5 प्रतिशत थी। घटकर 1992–93 में 66.5 प्रतिशत तथा 2004–05 में 49.0 प्रतिशत रह गई। उत्तर प्रदेश का महाराष्ट्र के साथ यह अनुपात 1980–81 में जहां 56.1 प्रतिशत था घटकर 1992–93 में 44.9 प्रतिशत तथा 2004–05 में 34.4 प्रतिशत हो गया। स्पष्ट है कि उत्तर प्रदेश एवं राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के बीच अन्तराल विकास के साथ बढ़ता ही जा रहा है। उत्तर प्रदेश एवं महाराष्ट्र के बीच का अन्तराल अपेक्षाकृत और भी ज्यादा है तथा बढ़ता ही जा रहा है। नई आर्थिक नीतियों के काल में यह अन्तराल और भी तेजी से बढ़ रहा है। तालिका से यह भी स्पष्ट है कि बिहार राज्य की स्थिति राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था एवं महाराष्ट्र राज्य के सापेक्ष उत्तर प्रदेश की तुलना में और भी अधिक सोचनीय है।

तालिका–2
प्रति व्यक्ति निवल राज्य घरेलू उत्पाद की प्रवृत्ति वृद्धि दर'' :1980–81 से 2004–05

(1993–94 की स्थिर कीमतों पर)

क्षेत्र	वृद्धि दर	आर वर्ग	एफ स्टैटिस्टिक
भारत	5.50	0.997	8539.27
उत्तर प्रदेश	3.94	0.988	1892.31
बिहार*	3.16	0.923	274.86
महाराष्ट्र	6.21	0.987	1700.63

स्रोत : प्रति व्यक्ति निवल राज्य घरेलू उत्पाद के आंकड़े केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन (सीएसओ), प्रकाशन : सांख्यिकीय बुलेटिन, आरबीआई, 2005–2006 । **नोट :** गणना लेखक द्वारा किया गया है। *बिहार में झारखण्ड सम्मिलित है। **चरघांताकीय प्रवृत्ति

वृद्धि दर।

तालिका–3
प्रति व्यक्ति निवल राज्य घरेलू उत्पाद प्रवृत्ति वृद्धि दर''

क्षेत्र	1980-81 to 1992-93 (1980–81 की कीमतों पर)			1993-94 to 2004-05 (1980–81 की कीमतों पर)		
	वृद्धि दर	आर वर्ग	एफ स्टैटिस्टिक	वृद्धि दर	आर वर्ग	एफ स्टैटिस्टिक
भारत	3.03	0.966	317.24	4.01	0.992	1285.91
उत्तर प्रदेश	2.34	0.916	120.55	1.43	0.822	46.24
बिहार*	1.55	0.513	11.60	1.99	0.509	10.36
महाराष्ट्र	3.81	0.905	104.55	3.11	0.914	106.81

स्रोत : प्रति व्यक्ति निवल राज्य घरेलू उत्पाद के आंकड़े केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन (सीएसओ), प्रकाशन : सांख्यिकीय बुलेटिन, आरबीआई, 2005–2006 । **नोट :** गणना लेखक द्वारा किया गया है। *बिहार में झारखण्ड सम्मिलित है। **चरघांताकीय प्रवृत्ति वृद्धि दर।

तालिका दो में 1980–81 से 2004–05 की अवधि में विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिव्यक्ति निबल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर दर्शाया गया है। राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में महाराष्ट्र जैसे राज्य यहां पहले से ही अपेक्षाकृत विकसित रहे हैं। आर्थिक गतिविधियां भी वहीं अधिकाधिक संबलित होती रही है। फलस्वरूप, उनके प्रतिव्यक्ति निबल घरेलू उत्पाद का स्तर जहां पहले से ही ऊंचा था, उसमें वृद्धि की दर ऊंची होती जा रही है। पिछड़े राज्यों की स्थिति ठीक इसके विपरीत है। ऐसी स्थिति में महाराष्ट्र तथा उत्तर प्रदेश एवं बिहार जैसे राज्यों के बीच आर्थिक असंतुलन निरंतर बढ़ता जा रहा है। ऐसी स्थिति में गरीबी एवं बेरोजगारी से ग्रसित पिछड़े राज्यों की श्रम शक्ति का एक बड़ा हिस्सा अपनी जीविका की तलाश में उच्च आर्थिक क्रियाशीलता वाले क्षेत्रों की ओर पलायन करता है तथा सन्नदध समस्याओं का सृजन होने लगता है। खुले बाजार की नीतिया इस समस्या को और बढ़ा रही हैं। तालिका तीन से स्पष्ट है कि नई आर्थिक नीतियों के पूर्व, 1980–81 से 1992–93 के दौरान जहां राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था एवं उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था के प्रतिव्यक्ति निबल घरेलू उत्पाद की प्रवृत्ति वृद्धि दर क्रमशः 3.03 एवं 2.34 थी वहीं नई आर्थिक नीतियों के काल, 1992–93 से 2004–05 की अवधि, में ये दर क्रमानुसार 4.01 तथा 1.43 हो गयी। स्पष्ट है कि इस कालावधि में जहां राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की प्रसंगत वृद्धि दर तेज हुई है। वहीं उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था में गिरावट आयी है। अर्थात् खुले बाजार की व्यवस्था के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश जैसे पिछड़े राज्यों का सापेक्षिक पश्चगमन हो रहा है। बिहार राज्य की स्थिति में इस समयावधि में मामली सुधार प्रतीत होता है। क्योंकि तालिका में दर्शायी गयी प्रथम अवधि के दौरान जहां इसकी प्रसंगत वृद्धि दर 1.55 थी वहीं द्वितीय अवधि में बढ़कर यह दर 1.99 हो गयी। परन्तु यह ध्यान रखना होगा कि बिहार राज्य के इस वृद्धि दर के आधार वर्ष के आंकड़े अपेक्षाकृत छोटे हैं। साथ ही साथ यदि इस वृद्धि दर की तुलना राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की सम्बन्धित वृद्धि दर से करें तो स्पष्ट होता है कि प्रथम अवधि में बिहार राज्य की संदर्भगत वृद्धि दर जहां राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर के आधे से कुछ अधिक थी। वहीं द्वितीय अवधि में यह आधे से कम हो गयी है। अतः उत्तर प्रदेश संदर्भ में किया प्रेक्षण कमोवेश बिहार पर भी लागू होता है। सामान्य नीतिगत उपायों से क्षेत्रीय असमानता की समस्या का कोई हल निकलता प्रतीत नहीं होता है। यह स्थिति विकास के प्रतिमान में आमूल परिवर्तन की

अपेक्षा करती है। इसके लिये आवश्यक है कि पिछड़े राज्यों का जनसमुदाय सचेतन होकर राज्य व्यवस्था से निवेश के प्रतिमान में आमूल–चूल संरचनात्मक परिवर्तन की माँग करे तथा यह सुनिश्चित कराया जाये कि क्षेत्रीय असंतुलन की समस्या लघु काल में ही नियंत्रित हो और उचित समयावधि में इसे उत्तरोत्तर कम करने की प्रक्रिया सृजित की जाये। इस स्थिति की प्राप्ति को ही सही अर्थो में भारत के आर्थिक विकास की संज्ञा दी जा सकती है।

सन्दर्भ सूची

- **जी0एम0 मायर;** इकोनामिक डेवलपमेंट : थियरी, हिस्ट्री, पॉलिसी, जॉनविले एवं सन्स द्वारा प्रकाशित, 1957, पेज नं0 2–3
- **एम0एन0 श्रीनिवास**, सोसीओलाजिकल पर्स्पेक्टिव, इन सर्च ऑफ इण्डियाज रेनासॉ, सेन्टर फार रिसर्च इन रूरल एवं इण्डस्ट्रियल्स डेवलपमेन्ट, चण्डीगढ़ द्वारा प्रकाशित, 1990, वाल्यूम एक, पेज नं0 31
- **वी0के0आर0वी0राव,** सोसीओलाजिकल पर्स्पेक्टिव, इन सर्च ऑफ इण्डियाज रेनासॉ, सेन्टर फार रिसर्च इन रूरल एवं इण्डस्ट्रियल्स डेवलपमेन्ट, चण्डीगढ़ द्वारा प्रकाशित, 1990, वाल्यूम एक, पेज नं0 57
- **ए0के0 सिंह**, सोसीओलाजिकल पर्स्पेक्टिव, इन सर्च ऑफ इण्डियाज रेनासॉ, सेन्टर फार रिसर्च इन रूरल एवं इण्डस्ट्रियल्स डेवलपमेन्ट, चण्डीगढ़ द्वारा प्रकाशित, 1990, वाल्यूम एक, पेज नं0 74